संवाद

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने की प्रक्रिया है। शिक्षा के क्षेत्र में आज अनूठे प्रयोग हो रहे हैं। इन प्रयोगों का उद्देश्य बच्चों में सीखने की ललक पैदा करना है ताकि वे ज़िम्मेदार नागरिक बन सकें व देश को प्रगति की ओर ले जाने में अपना योगदान दे सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक स्वयं सशक्त हो सकें इसके लिए आवश्यक है कि वे अपने ज्ञानवर्धन हेतु प्रयासरत रहें। सरकार बच्चों की शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार तथा शिक्षकों के क्षमतावर्धन हेतु प्रयासरत है परंतु यह प्रयास तभी सार्थक हो सकता है जब सरकार के साथ-साथ शिक्षक, अभिभावक और बच्चे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए स्वयं से भी पहल करें।

अभी हाल में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने और उनके व्यक्तित्व विकास के लिए देश के सरकारी विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों को राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा), जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इकाई है, द्वारा निष्ठा कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसका उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था को मज़बूत बनाना, वर्तमान वातावरण के अनुरूप शिक्षकों को प्रशिक्षित करना और शिक्षक एवं संस्था प्रधानों के लिए राष्ट्रीय एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना है ताकि इसका लाभ देश के सभी बच्चों को मिल सके तथा उनके सीखने के प्रतिफलों में सुधार हो सके। आने वाले समय में इससे जुड़े लेख व अनुभव भी इस पत्रिका के माध्यम से हम साझा करने की कोशिश करेंगे।

इस पत्रिका में कुल 12 लेख हैं। पत्रिका की शुरुआत 'प्राथमिक स्तर पर गुणवत्ता शिक्षा हेतु सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की सार्थकता' नामक लेख से की गई है। इस लेख में बताया गया है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) के माध्यम से न केवल बच्चों की सीखने की क्षमताएँ बढ़ती हैं अपितु उनका सर्वांगीण विकास भी होता है।

दूसरा लेख 'मातृभाषा ही प्राथमिक शिक्षा का माध्यम क्यों?' बतलाता है कि बच्चों को सिखाने के लिए उनकी मातृभाषा ही उपयुक्त रहती है क्योंकि इससे बच्चों को सीखने और समझने में सरलता होती है। अनजान या नई भाषा में समझना बच्चों के लिए कठिन हो जाता है। मातृभाषा के साथ

© NCERT not to be republished

यदि नई भाषा यानी विद्यालय में प्रयुक्त भाषा या अंग्रेज़ी भाषा को सुनने, समझने और बोलने के अनेकों-अनेक अवसर प्रदान किए जाएँ, तो बच्चा वह भी सीख लेता है। इसी प्रकार तीसरा लेख 'नई शिक्षा नीति एवं महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन—एक तुलनात्मक विवेचन', नई शिक्षा नीति और महात्मा गांधी द्वारा शिक्षा दर्शन का एक तुलनात्मक विवेचन करते हुए बताता है कि उन्होंने नवीन शिक्षा प्रणाली को एक संकल्पित स्वरूप दिया था, ठीक इसी प्रकार नई शिक्षा नीति ने समावेशन, राष्ट्रीयता के विकास हेतु कुछ बदलाव किए हैं जिनका ज़िक्र इस लेख में किया गया है।

'वर्तमान शैक्षिक परिवेश में जे. कृष्णमूर्ति के विचारों की उपादेयता' लेख में वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डालते हुए जे. कृष्णमूर्ति के कला और शिक्षा संबंधी विचारों को बच्चों के विकास के साथ जोड़कर दर्शाया गया है कि विद्यालय केवल अक्षर ज्ञान के लिए ही न होकर संपूर्ण व्यक्तित्व के संभावित विकास के लिए होते हैं।

'विद्यालय आधारित आकलन— अवधारणा तथा औचित्य' लेख बच्चों में सीखने की क्षमता और गुणवत्ता के उत्तरोत्तर विकास को बढ़ावा देने वाले विद्यालय आधारित आकलन की अवधारणा व औचित्य को प्रस्तुत करता है। विद्यालय आधारित आकलन का उद्देश्य बच्चे की सीखने में रुचि बढ़ाना, उनके लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना तथा उन्हें सतत विकास की ओर उन्मुख करना है।

कला जीवन का अभिन्न अंग है और सांस्कृतिक विरासत समाज का दिया अनुपम उपहार है जिसमें हमारे संग्रहालय एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। इसी से जुड़ा हमारा लेख 'शिक्षा में कला-संग्रहालयों, वीथियों और शैक्षिक भ्रमण की भूमिका' विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित करवाने में संग्रहालय भ्रमण की विशेष भूमिका पर प्रकाश डालता है।

लेख 'प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 1–5) हिंदी की पाठ्यपुस्तकों का सीखने के प्रतिफल के आधार पर पाठन' इस बिंदु पर प्रकाश डालता है कि अध्यापन के लिए कोई भी विधि सर्वमान्य नहीं होती। अध्यापक पाठ्य सामग्री को विविधता के साथ और भी ज़्यादा रोचक बनाकर प्रस्तुत कर सकते हैं। बच्चों की रुचि व प्रतिफल के आधार पर पठन-पाठन की नयी-नयी विधियों को अपनाना आवश्यक है। शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य, बच्चे में सीखने की सहज प्रवृति का विकास करना है। 'प्राथमिक स्तर के बच्चों में वैज्ञानिक चिंतन की अवधारणा का विकास' लेख बतलाता है कि अध्यापकों का उद्देश्य बच्चों तक अपनी बात पहुँचाना ही नहीं होता बल्कि उनमें अपने आसपास को जानने के कौतुहल को बढ़ाकर उन्हें तर्कशील ढंग से सोचना-सिखाना होता है। प्रश्न पूछने की जिज्ञासा और नए-नए प्रयोग करने की स्वतंत्रता उनमें वैज्ञानिक चिंतन का विकास करती है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के प्रश्नों व विचारों को सही दिशा देने में अध्यापक बेहद ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

नाटक, कहानियाँ, कविताएँ आदि भाषाई विकास में सहायक होते हैं। 'कविता शिक्षण की पद्धति' नामक लेख में कविता शिक्षण की पद्धति के विषय में बताया गया है। इसके साथ ही यह लेख इस बिंदु पर भी प्रकाश डालता है कि कविता के माध्यम से बच्चों को बोलने, सुनने तथा नए शब्द सिखाने का सक्षम प्रयास किया जा सकता है।

'प्राथमिक शिक्षकों की विशिष्ट चुनौतियाँ— कश्मीर के संदर्भ में एक अध्ययन' लेख कश्मीर में शिक्षा की स्थिति और विद्यार्थियों व अध्यापकों के अध्ययन-अध्यापन के प्रति समर्पण से रूबरू करवाता है। प्रतिकूल स्थितियों में शिक्षण प्रक्रिया बाधित होती है जिसके कारण शिक्षकों की चुनौतियाँ व ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। एक नियमित और सहज शिक्षण-अधिगम के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति में शिक्षण व शिक्षा का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

हम सभी गलतियाँ करते हैं और निरंतर अभ्यास के माध्यम से ही प्रवीण बनते है। 'गणित में गलतियों का विश्लेषण' लेख कक्षा में बच्चों की गणितीय गलतियों, उनके सीखने के प्रतिफलों में सुधार एवं सीखने के अवसरों के निर्माण का सुझाव देता है। गणितीय गलतियों के प्रति सकारात्मक रवैया रखने से विद्यार्थी उन्हें सहजता से सुलझाने का प्रयास करते हैं।

सृजनात्मकता एक स्व-अर्जित कला है। इसे कक्षा में सिखाया नहीं जा सकता परंतु उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के माध्यम से उन्हें प्रवीण अवश्य बनाया जा सकता है। पत्रिका में शामिल लेख 'लक्ष्मी की पेंसिल' बताता है कि बच्चों की चिंतन-प्रक्रिया को समझते हुए उन्हें एक स्वतंत्र शैक्षिक माहौल देने की आवश्कता है, अन्यथा न जाने कितनी कॉपियों से झोपड़ियाँ खो देंगे।

हाल ही में प्रस्तावित नई शिक्षा नीति जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सुझाव हेतु जारी की गई है, के प्रथम अध्याय 'प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा— सीखने की बुनियाद' को इस अंक में 'विशेष' के अंतर्गत शामिल किया गया है।

संवाद सदैव दोतरफ़ा होता है इसलिए आप पत्रिका के किसी भी अंक व लेख पर अपने विचार, टिप्पणियाँ तथा समीक्षाएँ हमें अवश्य भेजें। शिक्षा से संबंधित विचारों, जिज्ञासाओं, प्रश्नों व सूचनाओं को मंच प्रदान करना ही *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका का उद्देश्य है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक

© NCERT not to be republished